International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 3, May-June, 2025

मुनि कुन्थुसागर जी द्वारा विरचित जीवन विकास की पहली पहल का समीक्षात्मक अध्ययन

स्वस्ति श्री स्वामी जयेन्द्र कीर्ति

विभागाध्यक्ष (प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय जयपुर)

सारांश

मुनि श्री कुन्थु सागर जी कृत महत्वपूर्ण पुस्तक 'जीवन विकास की पहली पहल' जीवन की मार्गदर्शिका कही जाय तो यह शोधकार्य में अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानव जीवन के व्यक्तित्व का विकास कौन–कौन से बिन्दुओं पर अवलम्बित है उन सभी की व्याख्या पुस्तक में की गई है। पेड़ की सघनता उसके तने, डालें, शाखायें, पत्तियों आदि पर निर्भर करती है। उस पेड़ की जड़ें जितनी गहरी होगी पेड़ उतना ही सघन एवं समृद्ध होगा। ठीक इसी प्रकार मानव जीवन में व्यक्तित्व, शिक्षा, लक्ष्य संस्कार, कर्त्तव्य परायणता, अनुशासन, साहस, त्याग, समर्पण, एकता, विनम्रता और उदारता का जितना अधिक समावेश होगा व्यक्ति के जीवन की विकास यात्रा उतनी ही सार्थक और सफल होगी। मुनि श्री जी ने निबंध के रूप में विभिन्न बिन्दुओं पर अपने विचार रखे है जो अपने आप में अनूठे है, भावों में गहराई है। समझने में सरलता है। शब्दों की सादगी हृदय की भावना की कहने में पूर्ण सक्षम है। 'जीवन विकास की पहली पहल' में किन बिन्दुओं को विशेष मानकर जीवन यात्रा को सफल माना है। सर्वप्रथम व्यक्तित्व विकास के स्वरूप पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। व्यक्ति के जीवन में जितनी अधिक सफलतायें होगी, उसके जीवन में व्यक्तित्व का उतना ही विकास होगा। व्यक्तित्व क्या है। मानव जीवन में सार्थक मूल्यों की अभिवृद्धि होना ही व्यक्तित्व का विकास होना। जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता, साहस एवं अच्छे कार्यों में निडरता ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्धारित करते हैं। एक साधु, संत, मुनि को देखकर ही व्यक्ति एक दम झुक जाता है, समर्पित हो जाता है। क्योकि साधु, संत, मुनि का जीवन त्याग, तपस्या, साधारण मानव मे इन गुणों की कमी होने के कारण उसमें आकर्षण पैदा नहीं होता। व्यक्ति के आन्तरिक गुण ही उसके चेहरे को व्यक्तित्व को आकर्षक बनाते हैं।

व्यक्तित्व विकास का दूसरा एवं महत्वपूर्ण बिन्दु है उसका चरित्र। सच्चा व्यक्तित्व उसके सही चरित्र पर निर्भर करता है। है। कहा है कि 'धन जाता तो कुछ नहीं जाता, स्वास्थ्य गिरा कुछ जाता है पर चरित्र गया तो सब कुछ ही गिर जाता है।' मुनि श्री जी ने कहा हैः–

पारस पत्थर लोहे को सोना बना देता है।
आचरण शैतान को भी इन्सान बना देता है।
चरित्र इंसान को भगवान बना देता है।

आध्यात्म जीवन का अभिन्न अंग है। एक संसार बाहर है जो बाहरी आँखों से देखते हैं किन्तु दूसरा एवं सही संसार अन्दर है जो जीवन को सुन्दर एवं वैभवशाली बनाता है। इसे हम आध्यात्म के माध्यम से ही जान पाते हैं। मैं कौन हूँ, आत्मा कहाँ है ऐसे प्रश्न है जो हमें आध्यात्म के द्वारा ही पता चल सकते हैं। वाणी व्यक्ति को सम्मान दिलाती है। कठोर वाणी व्यक्ति को अहंकारी बनाती है। अतः मृदु वाणी का उपयोग व्यक्तित्व में चार चाँद लगाती है। कहने का तात्पर्य जीवन में विकास करना है, तो पुरुषार्थ तो करना ही होगा। जिसे जानते नहीं, पहचानते नहीं, जिसका मान नहीं, तो क्या हुआ अपने आत्मविश्वास के बल पर आगे बढ़ जा, ज्ञान अपने आप हो जाएगा मात्र खोज तो कर। दुनिया में जितने भी महान बनें, मुख्य बने है वे सब पहले डी बनें फिर डंपद बने है। इसी प्रयास में इटारसी में कुछ भाई बन्धुओं ने आकर पूज्य मुनि श्री कुंथुसागर जी महाराज जीवन विकास के लिए क्या पहल होना चाहिए। साधारण से विशेष कैसे बना जाता है। अपने प्रीमियम को कैसे प्रमोशन में लाया जाए आदि जिज्ञासा रखी उसी को आधार बनाकर पूज्य मुनि श्री ने अपने चिंतन धारा, अविरल स्वाध्याय की किरणों के माध्यम से समाधान किया और वही समाधान आज एक बही कृति के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास वीरोदय साहित्य प्रकाशन वालों को तीव्र पुण्य से प्राप्त हुआ। प्रत्येक युग

में जीवन को महान् बनाने के लिए एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की विशेष आवश्यकता होती है। जिसका सीधा संबंध आत्म–विकास से जुड़ा है। आज तक जो भी महान् व्यक्ति बनें हैं, उनका अपना एक विशेष व्यक्तित्व था। वे अपने जीवन के प्रति हमेशा जागरूक बने रहे और सभी के कल्याण व हित की भावना से ओत–प्रोत उदारमना रहे। वो हमेशा भूत की स्मृति और भविष्य की कल्पनाओं से दूर रहकर वर्तमान का आनंद लेते रहे। उन्होंने अपने मन को क्रोध, पाप आदि विकारों से हमेशा बचाए रखा और दया, परोपकार, उदारता, क्षमा जैसे गुणों को अपनाकर मन को शुद्ध बनाया। हम भी अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये मैत्री का भाव सभी जीवों के प्रति बनाए रखें।

जीवन का मूल लक्ष्य है स्वयं को जानना और जीवन की वास्तविकता को प्राप्त करना, आत्म–साक्षात्कार को प्राप्त होना। कई लोग सोचते हैं कि शायद अध्यात्म की जीवन में जरूरत नहीं है, जबकि यही जीवन की सबसे पहली जरूरत है। अध्यात्म का अर्थ है धर्म के प्रति आस्तिक होना। ईश्वर और आत्मा–परमात्मा पर विश्वास होना। बाह्य–जगत से परे अंतर्जगत की ओर कदम बढ़ाना। जंगल में कुछ लोग काम कर रहे हैं, उनकी आँखों पर पट्टी बंधी हुई है। वे फल तोड़ते हैं, झोपड़ी बनाते हैं, सफाई करते हैं, जानवर पालते हैं। ये सब काम वे आँखों पर पट्टी बांधकर ही करते हैं। उनमें से एक समझदार इंसान जो अपनी आँखों पर पट्टी उतरवाकर आता है, वह उन्हें आकर बताता है कि अमुख जगह पर पट्टी उतरवाने का काम किया जाता है, तुम भी चलो, अपनी पट्टी उतरवा लो, इससे तुम्हें बहुत फायदा होगा। यह सुनकर कोई कहे कि श्मुझे नहीं लगता कि इसकी इतनी आवश्यकता है और हमारे पास पट्टी उतरवाने के लिए समय भी नहीं है उससे आप क्या कहेंगे? ऐसे इंसान को यही कहा जाएगा कि तुम मूर्ख हो, पट्टी उतरवाओगे तो तुम्हारे काम बहुत जल्दी और अच्छे होने वाले हैं।'

इसी तरह संसार में भी, जो मान्यताओं की पट्टी बांधकर जीवन जी रहे हैं, उन्हें अध्यात्म की बिल्कुल आवश्यकता नहीं लगती। जब आप ऐसे लोगों के साथ जिंदगी भर जीने वाले हैं, जब आपके जीवन में अध्यात्म की अति आवश्यकता है। अध्यात्म से आत्मबल मिलता है। अध्यात्म हमें ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुँचा देता है। अध्यात्म से विशुद्ध बुद्धि, सात्विक बल और शक्ति मिलती है। जिसके माध्यम से मनुष्य दुःखों और बाधाओं को पार कर जाता है।

रुकना न तुम जब तक,
तुम्हारे श्वास का लवलेश है।
हिम्मत न हारो ऐ हृदय!
यह अध्यात्म का देश है
प्रस्तावना–

जीवन विकास का पहली पहल के रचयीता ने महान व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जो स्वयं की अवधारणा रखी है वह बहुत ही अनुकरणीय एवं आत्मसार करने योग्य है।

1. कर्तव्य	2. साहस	3. संकल्प	4. स्वाभिमान
5. अनुशासन	6. उत्साही बने	7. परोपकार के महत्व को समझें	
8. सहनशीलता	9. त्याग व समर्पण	10. एकाग्रता	11. विनम्रता
12. एकता	13. अपना मित्र सत्साहित्य		14. उदारचित बनें

एक व्यक्ति ने एक संत की बहुत सेवा की। जब संत जाने लगे तब उस व्यक्ति ने कहा– 'मुझे कुछ ऐसी सौगात देते जाइये ताकि मैं मानवता को प्राप्त कर सकूं।' संत ने उसे तीन चीजें दीपक, सुई और थोड़े से बाल देते हुए कहा– 'यह गांठ में बांध लो।' उस व्यक्ति को आश्चर्य हुआ और उसने कहा– 'इनके सहारे मैं कैसे महान् बन सकता हूँ। संत ने कहा–दीपक की तरह खुद जलो और दूसरों को रोशनी पैदा करो। सुई की तरह स्वयं को उघाड़े रखो पर दूसरों के छेद बंद करो। बालों की तरह मुलायम और लचीले रहो यही मानवता प्राप्ति के उपाय हैं।'

जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है वही महान् बनता है। इसलिए कहा जाता है कि अपने कर्त्तव्य का पालन किए बिना आज तक कोई महान् नहीं बन सका। आइए अब हम कर्त्तव्य के संदर्भ में समझें..

आखिर कर्त्तव्य क्या है?

जो काम अभेद–भावनाओं की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्त्तव्य है, करणीय है। जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्त्तव्य है। जिस प्रकार दूसरों के अधिकारों की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार अपना मानधारण करना भी उसका कर्त्तव्य है।

साहस– साहस मानव चरित्र का एक महत्वपूर्ण गुण है। जो साहसी होता है, उसमें खतरों से जूझने का पुरूषार्थ होता है। वह खतरे को खतरा मानता ही नहीं है। खतरा साहस के सामने अपने आप घुटने टेक देता है। साहस का सबसे बड़ा साथी गुण है–अभय। आपस में भय नहीं होता वह जब भी किसी काम में हाथ डालता है निडर मन से, बगैर किसी भय के न उसे कोई संकोच होता है और न कोई चिंता। उसके सामने मात्र उपस्थित कार्यों को सम्पन्न करने की प्रबल आकांक्षा रहती है। साहसी व्यक्ति का दूसरा गुण होता है। दृढ़ निश्चय। वह जब भी किसी कार्य को करता है तो दृढ़ता के साथ करता है उसका आधा मार्ग तो दृढ़ता के कारण ही निष्कंटक हो जाता है। कठिनाईयां हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें शिक्षा देती हैं, कि हम किस मिट्टी के बने हैं? साहस वह गुण है जो एक व्यक्ति को भय का शिकार हुए बिना उसे विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला करने के योग्य बनाता है। साहस न निर्भीकता का नाम है, और न ही उद्दण्डता का, बल्कि साहस तो भय से मुकाबला करने का नाम है। साहस आपकी योग्यता को दुगुना कर देता है। ढेर सारी असफलताओं के बावजूद भी साहस के साथ आगे बढ़ने वाले व्यक्तित्व का उदाहरण मैंने कहीं पढ़ा था उसे हम यहाँ प्रासंगिक समझ कर दे रहे है।

जीवन संग्राम में सफलता की आकांक्षा तो सभी रखते हैं, लेकिन विजयी वही होते हैं, जो स्वयं की शक्तियों को लक्ष्य पर केन्द्रित करते हैं और अपने कर्त्तव्यों को सम्पूर्ण निष्ठा, लगन, अटूट साहस एवं कड़ी मेहनत से पूरा करते हैं। साहस अद्भुत शक्ति का ऐसा प्रबल प्रवाह है जो अयोग्य व्यक्ति को भी सुयोग्य, कर्मठ एवं तेजस्वी बना देता है, लंगड़े में जान डालकर धावक बना देता है तथा बार–बार हारने वाले को विजयश्री दिला देता है। कार्ल मार्क्स, सुकरात ऐसे साहसी हुए जिन्होंने कुर्बानी दे दी लेकिन स्पष्ट लिखें कभी हार स्वीकार नहीं की। इन पंक्तियों को देखिए–

'मेरे कदम के साथ है, मंजिल लगी हुई।'
मंजिल जहाँ नहीं है, वहाँ मेरा कदम नहीं।।

हमारे अंदर की दृढ़ता और साहस दोनों ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके बल पर हम सफलता प्राप्त करते हैं, बाहरी साधन तो मात्र सहयोगी होते है आइए इस बात को हम एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझे।

संकल्प– संकल्प लेने का अर्थ है, अपने अंतस् में एक जागरूक प्रहरी को बिठा लेना, जो हमें प्रतिक्षण सचेत (समतज) बनाए रखता है। संकल्प शक्ति तो मानसिक शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। मनुष्य में शक्ति की कमी नहीं होती, कमी होती है संकल्प की। व्यक्ति का जैसा संकल्प होता है। वैसी ही निष्पतियाँ उसके हाथ लगती है। इसलिए संकल्प को महान बनाइये। किसी विशाल वाहिनी (सेना) के नायक को छीना जा सकता है परन्तु किसी गरीब आदमी से उसके संकल्प को उसकी दृढ़ता को नहीं छीना जा सकता। हम एक दृष्टांत के माध्यम से समझे कि संकल्प में कितनी शक्ति होती है–आइए, देखिए पत्थर की एक चट्टान को देखकर शिष्य ने गुरु से कुछ पूछना चाहा। वे ध्यानस्थ थे। जैसे ही ध्यान टूटा–वह पूछ बैठा– 'गुरुदेव! क्या इस चट्टान पर कोई शासन कर सकता है या यही सबसे शक्तिशाली है?' गुरु बोले– 'चट्टान से भी कई गुना शक्ति लोहे में होती है। वह इसे तोड़–तोड़कर, टुकड़े–टुकड़े कर देता है।' शिष्य फिर बोला– 'फिर लोहे से भी श्रेष्ठ कोई वस्तु है क्या? गुरुदेव बोले–क्यों नहीं, अग्नि है, जो लोहे को गलाकर पिघला देती है। फिर उसे चाहे जो आकार दिया जा सकता है।' शिष्य जिज्ञासु था, फिर जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहता है– 'अग्नि की लपटों के समक्ष किसी का वश नहीं चल पाता होगा? गुरु बोले–अग्नि की लपटों को जल शीतलता से मंदकर, बुझा देता है।' जल से टकराने की किसी में क्या ताकत होगी? पुनः प्रश्न किया, गुरु ने कहा– 'वायु का प्रवाह जलधारा की दिशा को भी बदल देता है। संसार का प्रत्येक प्राणी, प्राण–वायु के महत्त्व को जानता है, क्योंकि इसके बिना जीवन का महत्त्व ही क्या है?' शिष्य बोला–'जब प्राण ही जीवन है तो फिर उससे अधिक महत्वपूर्ण तो और कुछ नहीं होना चाहिए।' गुरुदेव हंसते हुए बोले– 'आदमी की संकल्प शक्ति वायु को, प्राण को भी वश में कर लेती है।' मानव की सबसे बड़ी शक्ति सम्पदा है। विभूति है–संकल्प।

आखिर वह कौन–सी बात, रहस्य अथवा जादू है जिसके बल पर करने वाले दुर्लभ कार्य भी कर डालते हैं। इस रहस्य को उजागर करते हुए एक कवि ने अत्यन्त ही सरल शब्दों में यूं प्रकट किया है–

जीत ही उनको मिली जो हार से जमकर लड़े हैं।
हार के भय से डिगे जो, वे धराशायी पड़े हैं।
हर विजय संकल्प के पद पूजती देखी गई है।
वे किनारे ही बचे जो सिंधु को बांधे खड़े हैं।

(सामान्यतः तीन प्रकार के लोग मिलते हैं एक तो वे जो प्रायः विघ्नों के भय से कार्य को प्रारंभही नहीं करते। दूसरे वे जो कार्य आरंभ तो कर देते हैं, किन्तु बाधा के प्रथम झटके में ही कार्य छोड़ देते हैं। और वे तीसरे होते हैं जो प्रारंभ किये गये कार्य को विघ्नों के बार–बार आने पर भी परित्याग नहीं करते। वे अपने संकल्प–पथ से तनिक भी विचलित नहीं होते। संकल्प–वीरों की गाथाओं से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। सच तो यह है कि दृढ़ संकल्प के बिना किसी ने अपनी मंजिल प्राप्त ही नहीं की है।

स्वाभिमान– स्वाभिमान का अर्थ है अपने आप को महसूस करने का ढंग। स्वाभिमान संकल्प और विश्वास को दृढ़ बनाता है। स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी सादगी और गौरव को कायम रखता है। दृढ़–विश्वासी होने के साथ–साथ स्थिर चित्त वाला होता है। दूसरों के सम्मान का, स्वाभिमान का ध्यान रखता है। स्वाभिमानी व्यक्ति स्वभाव से विनम्र होता है। उसका जीवन अनुशासित जीवन होता है। अपने आपको पहचानने का अर्थ है जीवन का सबसे बड़ा ज्ञान हासिल कर लेना। पंजाब के एक स्कूल के कुछ छात्र प्रधानाध्यापक के पास पहुँचे और उनसे आग्रह किया कि हम बहुत दिनों से पिकनिक नहीं गए हैं। यदि आप स्वीकृति दें तो हम पिकनिक का कार्यक्रम बना लें। बच्चों की तीव्र इच्छा और उत्साह को देखते हुए प्रधानाध्यापक ने पिकनिक की स्वीकृति दे दी। सभी छात्र बहुत खुश हुए। दिन, स्थान व समय निर्धारित करने के बाद सभी ने यह भी तय किया कि प्रत्येक छात्र घर से कुछ न कुछ खाने का सामान लाएगा, ताकि सभी मिल–बांटकर खा सकें। उनमें से एक छात्र ने घर जाकर अपनी माँ को पिकनिक के बारे में बताया और कुछ खाने का अच्छा सामान मांगा। घर में मात्र कुछ खजूर पड़े थे। कुछ देर बाद पिता आए तो माँ ने बालक के पिकनिक जाने के विषय में उन्हें बताया, किन्तु उनकी जेब भी खाली थी। तब उन्होंने निश्चय किया कि कुछ पैसे उधार लेकर बालक की इच्छा पूरी करेंगे। वे पड़ोसी के पास जाने को हुए तो बालक ने उनका हाथ पकड़ लिया और बोला, पिताजी आप कहाँ जा रहे हैं? पिता बोले, बेटा घर में तो कुछ है नहीं और मेरे पास भी पैसे नहीं हैं। तुम्हारी पिकनिक के लिए पड़ोसी से कुछ पैसे मांग लेता हूँ। तब बालक ने कहा, नहीं पिताजी, उधार मांगना उचित नहीं है। मैं पिकनिक पर नहीं जाऊँगा और यदि जाऊँगा भी तो खजूर तो हैं ही। कर्ज मांगकर रूतबा दिखाना उचित नहीं है। यह समझदार बालक लाला लाजपतराय थे। दूसरों की कृपा पर जीना कायरता है। स्वयं को इतना समर्थ बनाना चाहिए कि दूसरों की सहायता की जरूरत ही न पड़े, यही उन के विचारों का सार है। आत्ममंथन करें कि अपनी नजरों में आपका क्या मूल्य है ? आप स्वयं को क्या समझते हैं? दीन–हीन, पराधीन या स्वावलंबी, ईमानदार, सद्पुरुष। स्वाभिमानी बनकर दूसरे का अहसान मत लो। स्वाभिमान बनाए रखना चाहते हो तो प्रदर्शन एवं झूठी शान–शौकत से बचों। स्वाभिमानी होना या आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने आप में बड़ी सम्पत्ति होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों से सहायता लेने की बजाय दूसरों की मदद करता है। दूरदर्शिता को जीवन में स्थान दें।

अनुशासन– अनुशासन और शिक्षा देने के मार्ग सर्वथा नवीन हो सकते हैं। यदि हमारा चिंतन परहित से प्रेरित हो तो दंड के तरीके में भी कुछ ऐसी संभावनाएं पैदा हो जाती हैं, जिसमें बिना प्रताड़ना के ही व्यक्ति पूर्ण परिवर्तन के लिए संकल्पित हो जाता है। लेकिन ऐसा रचनात्मक अनुशासन किसी करूणामयी एवं संयमित मनुष्य के लिए ही संभव है। संयम जो आत्मानुशाासन और साधना से आता है। स्वामी विवेकानंद के भ्रमण के दौरान की घटना है। उन्हें एक तेजस्वी साधु मिले। प्रसंग में प्रसिद्ध योगी पवहारी बाबा की चर्चा निकली। साधु ने एक कहानी सुनाई। एक रात कोई चोर बाबा की गुफा से सामान लेकर भागने लगा। तो वजन अधिक होने की वजह से सामान गिरने लगा, योगीराज की तंद्रा टूटी। सारा माजरा समझ वे तेज कदमों से चोर के पीछे दौड़ पड़े। दूर तक पीछा कर अंत में उन्होंने चोर को पकड़ लिया। वे हाथ जोड़कर आँसू भरे नेत्रों से कातर स्वर में कहने लगे नारायण आप अपना यह सब सामान कृपा कर ले जाएं। ऐसा कहकर उन्होंने साथ लाया सब सामान सौंप दिया। उस साधु ने स्वामी से कहा– आप जानते है वह चोर मैं था। एक संत की सच्ची सहृदयता से चोर महात्मा बन गया।

अनुशासन का मूल सिद्धांत है कि वह व्यक्ति के मन में भय नहीं, विश्वास का भाव जगाता है और इसी के चलते व्यक्ति बड़े से बड़े अपराधी में भी आमूलचूक परिवर्तन करने की क्षमता रखता है। अनुशासन वह कठोर ब्रश है जो मन के मैल को साफ कर देता है। जल को बांधे बिना बिजली प्राप्त नहीं की जा सकती। उसी प्रकार मन को अनुशासन की डोर से बांधे बिना जीवन में ऊँचाईयाँ प्राप्त नहीं की जा सकती। अनुशासन की शिक्षा हमें बचपन से ही ग्रहण करनी चाहिए। हम पत्ते और फूल के अनुशासन को लाना चाहते हैं और जड़ (मूल) के अनुशासन को विस्मृत कर देते है। यूँ अनुशासन कभी नहीं आएगा।आज–कल माता–पिता अपने बच्चों से जरूरत से ज्यादा लाड़–प्यार दर्शाते हैं, जो उचित नहीं है। बच्चो पर अंकुश रखना भी आवश्यक है। उनके लिए 'प्रेम' और 'अनुशासन' दोनो आवश्यक हैं। प्रेम और नियंत्रण दोनों होंगे तभी प्रेम का असर होगा। बच्चों की अच्छी और बुरी आदतों के लिए माता–पिता ही सबसे अधिक जिम्मेदार होते हैं, परन्तु आजकल देखा जाता है कि वे बच्चों को उचित–अनुचित व्यवहार सिखाने की बिल्कुल कोशिश नहीं करते। वे अनुचित लाड़–प्यार दिखाकर उन पर खूब पैसा लुटाते हैं। सुख–समृद्धि और ऐशो–आराम का जीवन जीने की समस्त सामग्री उपलब्ध कराते हैं, पर वे एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचते कि कैसे वे बच्चों को सद्गुण विकसित करने की प्रेरणा दें? माता–पिता का कर्त्तव्य है कि वे बच्चों को उचित व्यवहार और नैतिकता के विकास की प्रेरणा दें। उन्हें केवल जीवन गुजर–बसर करने को प्रोत्साहित करना ठीक नहीं। माता–पिता को तभी प्रसन्न होना चाहिए जब उनके बच्चे साफ–सुथरा जीवन जिएं, अच्छा नाम कमाएं और अच्छा व्यवहार करें। यही नहीं, पुत्र के जन्म मात्र पर खुशी मनाना तो मूर्खता ही है।

उत्साही बने– कक्षा में एक छात्र की पीठ पर उसके साथी अक्सर लिख देते थे, 'मैं बुद्धू हूँ'। इसके बाद वे उसका मजाक उड़ाते थे। लेकिन उस छात्र ने अपने अध्यापक की एक बात गांठ बांध रखी थी, 'हिम्मत न हारो'। अपने साथियों द्वारा किये गए मजाक को सहन करते हुए एवं सफलता और असफलता की चिंता किए बिना लगातार पूरे मन से वह कक्षा में आता और लगन से पढ़ाई करता। दोस्तों द्वारा किए गए मजाक की उसने न तो कभी शिक्षक से शिकायत की और न ही दोस्तों से इस बारे में कभी कुछ कहा। यह बालक बड़ा होकर विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन बना। हम भी मार्ग में आने वाली बाधाओं से बिना घबराए और किसी से भी द्वेष किए बगैर लगन से अपनी मंजिल की ओर बढ़ेंगे और अपने दृढ़निश्चय से कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी हंसते हुए पार कर जाएंगे क्योंकि परिश्रम ही सफलता की कुंजी होती है। हम भी इसी प्रकार का उत्साह अपने जीवन में जाग्रत करें और मार्ग में आने वाली बाधाओं से न घबराते हुए सफलता की ओर कदम बढ़ाते जाएं। किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है, दृढ़ इच्छा शक्ति को जाग्रत करना। उत्साही व्यक्ति अपने आप में चलता हुआ पावर हाऊस है। केवल काम करना उत्साह नहीं हैं, केवल कष्ट सहना उत्साह नहीं हैं, केवल प्रसन्न रहना उत्साह नहीं है, बल्कि काम करते–करते बीच में आने वाले कष्ट को सहते हुए प्रसन्न रहना और फिर भी काम करते रहना उत्साह है।

अपने काम को आसान बनाने के लिए जीवन में उत्साह पैदा कीजिए। वे विचार बोते हैं हास्य विनोद उपजाते हैं। वे लोगों के भीतर उत्साह जगाते हैं। उत्साही कहता है– हर आदमी सांस लेता है पर वही व्यक्ति जीता है, जो उत्साह से भरा होता है।

उत्साह + मेहनत= सफलता

भय अमावस की रात है तो उत्साह पूनम की चांदनी। उत्साही मनुष्य आत्मविश्वास की नौका पर सवार होकर आपत्तियों की नदियों को आसानी से पार कर लेता है। उत्साही व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा करके, उसे अच्छा कार्य करने की प्रेरणा देता है। लंदन का एक किशोर किसी स्टोर में क्लर्क था। उसे सुबह पाँच बजे उठना पड़ता था, स्टोर में झाड़ू लगानी पड़ती थी और वह हर दिन चौदह घंटे बुरी तरह काम करता था। एक दिन वह सुबह उठा और बिना नाश्ता किए ही पंद्रह मील पैदल चलकर अपनी माँ से मिलने गया, जो हाउसकीपर का काम करती थी। वह बेहद दुःखी था। उसने माँ को अपना दुखड़ा सुनाया। वह रोया। उसने यह भी कसम खाई कि अगर उसे स्टोर में कुछ समय और काम करना पड़ा तो वह आत्महत्या कर लेगा। फिर उसने अपने पुराने स्कूल टीचर को एक लंबा और दुःखद पत्र लिखा। उस पत्र में उसने लिखा कि उसका दिल टूट चुका है और अब वह जीना नहीं चाहता। उसके पुराने स्कूल टीचर ने जबाव में उसकी तारीफ की और उसे आश्वस्त किया कि वह सचमुच बहुत बुद्धिमान है और बेहतर जिंदगी का हकदार है। उन्होंने उसे स्कूल टीचर का काम देने का भी प्रस्ताव रखा।

परोपकार के महत्व को समझें–

हित सरल धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

परोपकार के समान कोई धर्म नहीं होता और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं होता। गुलाब का फूल पूरे उपवन में अपनी खूबसूरती और खुशबू के लिए विख्यात था। जो भी उसके पास से गुजरता, उसे एकटक निहारे बगैर नहीं रह पाता। उसकी खुशबू तो ऐसी कि लोग अपनी सुध–बुध भूल जाएं। उसकी खुशबू और खूबसूरती से प्रभावित होकर लोग इन फूलों को तोड़कर अपने साथ ले जाने लगे। इससे बेचारा गुलाब बहुत दुःखी रहने लगा। पौधे की शाखाओं पर गुलाब के साथी निरंतर घटते जा रहे थे और वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहा था। आखिरकार गुलाब अपनी परेशानी लेकर एक जानकार के पास पहुँचा। उस व्यक्ति ने गुलाब की समस्या को ध्यान से सुना। इसके बाद उसने गुलाब से कहा–इस दुनिया की रीत यही है कि जो आपके साथ जैसा व्यवहार करता है, आपको भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुर्जनों के साथ दुष्टता करना ही उचित नीति है। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो यह संसार तुम्हारा अस्तित्व मिटा देगा।

गुलाब ने उस व्यक्ति की सलाह गांठ बांध ली। उसने लौटकर आने के बाद अपनी डालियों पर कांटे पैदा करना आरंभ कर दिया। अब जो कोई भी उसकी और हाथ बढ़ाता वह कांटो से उसे छलनी कर देता। इससे लोगों का उसकी ओर आना कम हो गया। कुछ दिनों के बाद गुलाब के उस पौधे को एक साधु के सत्संग का भी अवसर मिल गया। साधु ने उसे बताया– 'यदि अपने जरिए किसी का भला होता है तो उससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। परोपकार में अपने जीवन को खपाने वाले से बढ़कर सम्माननीय दुनिया में और कोई नहीं होता' गुलाब को अपनी गलती का अहसास हो गया। अब उसे दोबारा माहौल में अपनी खूबसूरती और सुवास बिखेरने में खुशी मिलने लगी। आज गुलाब ने दुनिया में जो सम्मान पाया है, वह अपने कांटो के बल पर नहीं, वरन् अपने पुष्पों के सौंदर्य के बल पर अर्जित किया है। जिस प्रकार दूध में मक्खन समाया रहता है, उसी प्रकार परोपकार में स्वोपकार समाया रहता है।

मंजिल अभी दूर है चलो कुछ, और कर लिया जाए।
एक दुःखियारे का दुःख, दूर कर लिया जाए।।

जब परोपकार करने के लिये तैयार हो ही गए तब यह भी भूल जाओ कि कौन शत्रु है और कौन मित्र? परोपकारी को शत्रु और मित्र को समान नजर से देखना चाहिए। देखिए एक ऐसे ही परोपकारी का उदाहरण जो परोपकार करते समय शुत्र और मित्र में समान भाव रखता था।

सहनशीलता– समता का उपदेश सरल है आचरण कठिन है–
दो व्यक्ति सहनशील होते हैं– एक तो वो–

1. जिसमें बोलने की क्षमता नहीं होती है
2. दूसरे वो जिनका विवेक जाग्रत होता है।

प्रतिक्रिया को सहन करने वाला विद्वान होता है।
प्रतिक्रिया से भरा जीवन श्वान जैसा होता है।।

व्यक्तित्व के विकास का आधारभूत तत्व सहनशीलता है, समता है। एक बार एक व्यक्ति के घर संत पधारे संत काले कपड़े धारण किए हुए थे। यह देखकर व्यक्ति संत से बोला– 'महाराज! आप मेरे घर ये शोक वस्त्र क्यों पहनकर आए हैं? आप इस तरह मेरे घर में अपशकुन कर रहे हैं।' संत ने शांत भाव से उत्तर दिया– 'मैंने किसी कारण से काले वस्त्र धारण किये हैं। क्या तुम वह कारण सुनना चाहोगें?' व्यक्ति द्वारा स्वीकृति जताने पर संत वोले– 'मेरे काम, क्रोध, मोह, मत्सर आदि मित्रों की मृत्यु हो गई है। उन्हीं के शोक में ये काले वस्त्र धारण किए हैं।' वह व्यक्ति समझ गया कि संत सांसारिक दुर्बलताओं पर विजय पाने का दावा कर रहे हैं। उसने परखने के इरादे से अपने नौकर को बुलाकर हुक्म दिया कि 'संत को फौरन घर से निकाल दो।' नौकर ने आज्ञा का पालन किया। थोड़ी देर बाद उस व्यक्ति ने संत को पुनः घर के भीतर बुलाया। आते ही फिर

निकलवा दिया। इस तरह उसने बार–बार संत को घर बुलाने के बाद अपमानित कर बाहर निकलवाया, किन्तु उनके चेहरे पर क्रोध की एक शिकन तक नहीं आई। वह व्यक्ति उनकी विनयशीलता पर नतमस्तक होकर बोला– 'मैंने आपको क्रोध दिलाने की भरपूर कोशिश की, किन्तु आप शांत बने रहे। सच में आप महान् हैं।' तब संत ने कहा– 'इसमें मेरी कोई प्रशंसा नहीं है। मुझसे ज्यादा क्षमाशील तो कुत्ते होते हैं जो हजारों बार दुत्कारने पर भी वापस आ जाते हैं। कुत्ते भी जिनका पालन कर सकें उसमें प्रशंसा की क्या बात है? वस्तुतः सहनशीलता से ही व्यक्ति सच्चे अर्थों में बड़ा बनता है और उसमें सभी प्रतिकूलताओं पर विजय पाने का साहस पैदा होता है।

तप करना उतना कठिन नहीं है, जितना कठिन है किसी व्यक्ति या परिस्थिति को सहना। दूसरे की गलती को देखकर क्रोध करने वाला बहुत बड़ी गलती करता है, क्योंकि वह दूसरों की गलती की सजा स्वयं को देता है। इससे बचने का उपाय है मात्र सहनशील होना। जो व्यक्ति जितना महान् होता है वह उतना ही सहनशील होता है। अब्राहम लिंकन की पत्नि कठोर स्वभाव की कर्कशा स्त्री थी। इस कारण से लिंकन का घरेलू जीवन दुःखी हो गया था। कितनी ही बार सब लोगों के सो जाने पर, वे काफी रात गए, मकान के पिछले दरवाजे से घुसकर चुपचाप सो जाते और दिन निकलने से पहले ही उठकर ऑफिस चले जाते थे। दिन भर हंसते और हंसाते थे।

एक बार एक नौकर को लिंकन की पत्नि ने खूब फटकारा उसे यह बात बहुत बुरी लगी। इसलिए उसने लिंकन से इसकी शिकायत की। अब्राहम लिंकन ने हंसकर कहा– 'अरे भले आदमी! मैं 15 साल से इस परिस्थिति का सामना कर रहा हूँ और सब कुछ शांतिपूर्वक सह रहा हूँ। तुम से एक दिन की फटकार भी सहन नहीं होती।' सहनशक्ति को धारण करना बहादुरी का कार्य है। जिसने इस कार्य को चुनौती के रूप में लिया, वह हर समस्या का सरलता से सामना कर सकता है। सहन करना अर्थात् समस्या रूपी परीक्षा को पास करना है।

जब मिट्टी के लौंदे को घड़े का आकार मिला उसने कुंभकार से पूछा– 'क्या आग में पकना जरूरी है? क्या यह सब कष्ट सहना जरूरी है?' कुंभकार ने कहा– 'यदि तुम्हें पानी का या अन्य पदार्थ का आधार बनना है तो आंच सहना आवश्यक है। कलश और कुंभ बनना है तो। इसलिए मनुष्य को कुछ बनना है तो कष्ट सहना जरूरी है वरना नहीं। यदि केवल मिट्टी का लौंदा मात्र रहना है तो सहना जरूरी नहीं है।

त्याग और समर्पण– त्याग के समान कोई सुख नहीं है। त्याग हमारी आत्मा को स्वस्थ्य और सुंदरतम् बनाता है। त्याग का संस्कार हमें प्रकृति से ही मिलता है। वृक्षों में पत्ते आते हैं और झड़ जाते हैं, फल लगते हैं और गिर जाते है गाय अपना दूध स्वयं त्याग करती है। श्वास लेने के साथ–साथ छोड़ना भी कितना जरूरी है यह हम सभी जानते हैं इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि त्याग एक ऐसा धर्म है जिसके बिना हमारा जीवन कष्टमय हो जाता है।

किसी नगर के एक छोर पर एक छोटी–सी कुटिया में एक साधु रहता था। वह हमेशा ईश्वर की भक्ति में लीन रहता था। नगरवासी उसका बहुत आदर करते थे। वे उसे दान में कीमती वस्तुएं देते रहते थे। एक दिन साधु ने अपने शिष्य से कहा 'बेटा चलो अब किसी दूसरे नगर चले।' शिष्य बोला, 'नहीं गुरुजी अभी हमें कुछ और समय यहीं पर रहना चाहिए।' यहाँ चढ़ावा बहुत चढ़ता है। लोग मुक्त हाथों से आपको दान करते हैं। थोड़ा और धन जमा हो जाए फिर चलेंगे।' गुरु ने कहा, 'धन–संग्रह करके क्या करेगा? हमें धन संग्रह नहीं करना। तू चल मेरे साथ।'

साधु और शिष्य दूसरे नगर की ओर चल पड़े। शिष्य ने कुछ पैसे संचय किए हुए थे, जिन्हें उसने अपनी धोती की गांठ में बांध लिया था। चलते–चलते उनके मार्ग में एक नदी आ गई। सामने एक नाव थी। नाविक नदी पार कराने, के लिए चार आने मांगता था, साधु के पास पैसे नहीं थे, जबकि शिष्य देना नहीं चाहता था। दोनों नदी किनारे बैठ गए। बैठे–बैठे सांझ हो गई। शाम को नाविक जब अपने घर जाने लगा तो बोला, 'बाबा, आप लोग यहाँ कब तक बैठे रहोगे?' यह जंगल है। रात में यहाँ जंगली जानवर घूमते हैं। वे आप लोगों को मार सकते हैं। 'शिष्य ने कहा,' तब तुम हमें पार क्यों नहीं ले जाते? 'नाविक बोला, मुफ्त में ले जाना मेरे सिद्धांतो के खिलाफ है। मैं दो–दो आने जरूर लूंगा।'

जंगली जानवरों की बात पर शिष्य बहुत घबराया हुआ था। उसने धोती की गांठ से चार आने निकालकर नाविक को दे दिए, नाविक ने उन्हें नदी पार करवा दी। दूसरी ओर आकर शिष्य, गुरु से बोला, 'देखा गुरुजी, आप तो कहते थे कि पैसा जमा करना ठीक नहीं। आज वही हमारे काम आया।' साधु ने हंसते हुए कहा, 'सोच कर देख बेटा, पैसा जमा करने से तुम्हें सुख नहीं मिला बल्कि पैसे का त्याग करने से ही तुम्हें सुख मिला है। पैसे तो पहले भी तेरे पास थे लेकिन जब तूने उन्हें त्याग किया तभी हम पार हुए हैं। सुख त्याग में ही रहता है, जमा करने में नहीं।' शिष्य की आँखें खुल गई। प्रकृति का नियम है जो देता है वह पाता है, जो संचय करता है वह सड़ता है।' छोटी पोखर का पानी घटता, सड़ता और सूखता है किन्तु झरने में सदा स्वच्छता, गतिशीलता बनी रहती है और वह अक्षय रूप से बना रहता है। जो देना नहीं जानता वह गतिशीलता के नियम का उल्लंघन करता है और संचय करके थोड़ा ही प्राप्त कर पाता है इस संसार और प्रकृति में देने और लेने की प्रमुख क्रियाएं होती हैं जो देता है, बांटता है वह फायदे में रहता है। कृपण और स्वार्थी हमेशा घाटे में रहता है वह न तो स्वयं भोग पाता है और न ही दान–पुण्य कर पाता है इसलिए वह इस लोक एवं परलोक दोनों में दुःखी रहता है।

ग्रहण से त्याग बड़ा होता है और ग्रहण करने वाले से त्याग करने वाला अधिक समर्थ होता है। पदार्थ की कामना ही दुःख का कारण है, दुःख से छूटना है तो कामना त्याग दो। जब बादल पानी का त्याग कर देता है तो स्वच्छ निर्मल हो जाता है। वास्तव में त्याग ही जीवन में उज्ज्वलता प्रदान करता है। समुद्र का जल खारा होता है क्योकि वह जल का संचय करता है और मेघों का जल मीठा होता है। क्योंकि वह जल का त्याग करता है। महाभारत काल में धृतराष्ट्र जब सारी दौलत का स्वामी बनना चाहता था और कौरवों का, अन्याय का पक्ष ले रहा था उस नीतिज्ञ विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा कि सुनो राजन्– ''ऋषि सब कुछ त्याग कर भी सुखी रहते हैं और राजा सब कुछ पाकर भी तड़पते रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सुख भोग में नहीं है बल्कि सुख तो त्याग में है।'' रामायण में भी एक त्याग का अनूठा उदाहरण मिलता है, जब श्री रामचंद्र जी राज्य छोड़कर वनवास की ओर चल दिए तब भरत जी भी राज्य नहीं करना चाहते थे क्योंकि वे स्वार्थ त्याग कर कठिन तपस्या करने में ही आनंद मानते थे।

एकाग्रता– यदि जीवन में प्रगति करने और बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई बुरी बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना। अपने सामने एक ही लक्ष्य रखना चाहिए उस लक्ष्य के सिद्ध होने तक दूसरी किसी बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। रात–दिन सपने में भी उसी की धुन रहे तभी सफलता मिलती है।

एक ही ध्येय पर अटल रहने का नाम एकाग्रता है।

एक बार बारूद का ढेर, सूरज की किरणें, भाप और नदी आपस में मिलें। सभी अपना–अपना दुःखड़ा रोने लगे। बारूद का ढेर बोला, 'मेरी भी क्या जिंदगी है, कोई भी आता है और मुझमें आग लगाकर चला जाता है। मैं तो भक् से जलकर रह जाता हूँ।' इतने में सूरज की किरणों ने कहा, 'हम भी तो धरती पर बिना किसी प्रयोजन के विचरण करती रहती हैं।' भाप बोली, 'मुझे भी क्या काम हैं? मैं तो हवाओं में तैरती ही रहती हूँ। ये भी कोई जिंदगी है भला? नदी की अपनी पीड़ा थी कि मेरा पानी सालों–साल बहता है, मैं किस काम आती हूँ। चारों दुःखी होकर बात कर रहे थे वहीं एक बुजुर्ग बरगद था, जो इन सब की बातें सुन रहा था। सारी बातें सुनकर, उसने कहा, 'दोस्तो, तुम परेशान क्यों हो? तुम्हारी जिंदगी भी बड़े काम की है। तुम सब में काफी संभवनाएं हैं। जरूरत बस एक दिशा देने की है।' उत्साह जगाने की है। सभी एक स्वर में बोले, 'वह कैसे? बरगद ने जवाब दिया, मैं बताता हूँ। बारूद के ढेर को अगर बंदूक या तोप में भरकर एक खास दिशा में गोली सहित ढकेला जाए, तो निशाने पर जाकर चीजों को तहस–नहस करने की ताकत रखता है। इसी तरह सूरज की किरणों को भी आतिशी शीशे से एक जगह इकट्ठा किया जाए तो, देखते ही देखते आग लग जाती है। भाप को भी जमा करके एक खास नली से गुजारा जाए, तो रेलगाड़ी के इंजन तक दौड़ने लगते हैं। नदी के पानी के साथ भी कुछ ऐसा ही है, अगर नदी के जल को बांध बनाकर इकट्ठा किया जाए, तो पूरे क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। इसलिए दोस्तों, खुद की क्षमताओं को कम मत आंको और एकाग्रता को शक्ति मानकर जुट जाओ। बरगद की बात सुनकर वे अपनी शक्ति को पहचान गए और उत्साह के साथ अपने–अपने काम में लग गए। अनिश्चितमना पुरुष भी मन को एकाग्र करके जब सामना करने को खड़ा होता है तो आपत्तियों का लहराता हुआ समुद्र भी दबकर बैठ जाता है। प्रत्येक कार्य पर विजय पाने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है। अपनी अभिलाषाओं को वशीभूत कर लेने पर मन को जितनी देर तक चाहो

एकाग्र किया जा सकता है। एकाग्रता के साथ किया गया कार्य कभी असफल नहीं होता। विभिन्न कार्यों में उलझा मन किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकता। संसार के प्रत्येक कार्य में सफलता पाने के लिए एकाग्रचित्त होना परम आवश्यक है। जो लोग चित्तं को चारों ओर बिखेर कर काम करते हैं उन्हें कई वर्षों तक सफलता का मूल्य मालूम नहीं होता और मन में एकाग्र शक्ति प्राप्त करने वाले मनुष्य संसार में किसी भी समय असफल नहीं होते।

विनम्रता— जैसे फल—फूल से परिपूर्ण वृक्ष और पानी से भरे बादल झुक जाते है। ठीक उसी प्रकार गुणवान व्यक्ति हमेशा नम्र स्वभावी होते हैं। नदी, पहाड़ों, वृक्षों से टकराकर अंत में सागर में जाकर मिल जाती है क्योंकि पानी स्वभाव से ही मृदु हुआ करता है। विनम्रता महान् लोगों का आभूषण हुआ करती है। कहते है कि— एक गांव में श्रीचंद नामक एक विद्वान व ईश्वर भक्त व्यक्ति रोज कथा सुनाते थे। उसी गांव में राजशेखर नाम के सज्जन भी रहते थे, जो एक अच्छे विद्वान थे। राजशेखर, श्रीचंद से मन ही मन ईर्ष्या रखते थे। उन्हें लगता था कि लोग श्रीचंद के पास कथा सुनने क्यों जाते हैं? मेरे पास क्यों नहीं आते? मैं उससे किस बात में कम हूँ? एक दिन शाम को राजशेखर थके हुए घर आए। उन्हें तेज भूख लगी थी कि उनकी पत्नि कहीं बाहर गई हुई थी। थोड़ी देर तक उन्होने पत्नि की प्रतीक्षा की, फिर मन में आया कि कहीं पत्नि श्रीचंद की कथा सुनने तो नहीं गई? आखिर वे वहाँ पहुँच ही गए, जहाँ श्रीचंद की कथा चल रही थी। सचमुच उनकी पत्नि वहीं पर कथा सुन रही थी। राजशेखर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। वे चिल्ला उठे तुम मूर्ख हो श्रीचंद, तुम कथा सुनाना क्या जानते हो? ये सारे तुमसे भी बड़े मूर्ख हैं जो तुम्हारी कथा सुनते हैं। यह सुनकर सभी लोग अचरज में पड़ गए। कथा समाप्त हो गई और सभी लोग उठकर चले गए। घर पहुँचकर राजशेखर को अपने व्यवहार पर पश्चाताप हुआ और सुबह उन्होंने श्रीचंद से मिलने का तय किया, सुबह उठकर बाहर आने पर उन्होंने देखा कि स्वयं श्रीचंद उनसे मिलने आए हैं। श्रीचंद बोले—आपने मुझे मेरा दोष दिखा दिया, इसका मुझे संतोष है किन्तु मुझे मेरा अपराध समझ नहीं आया। मुझे क्षमा करें। श्रीचंद की विनम्रता से राजशेखर ग्लानि से भर गया। सार यह है कि यदि दुर्व्यवहार का जवाब विनम्रतापूर्ण व्यवहार से दिया जाए तो प्रतिफल सुधार एवं सदाचार के रूप में सामने आता है।

मानव जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है— विनम्र होना। विनम्रता को ग्लिसरीन की तरह अपनाइए ताकि फटे हुए संबंधों की त्वचा फिर से स्वस्थ्य, सुंदर और सुकोमल हो सके। जैसे आकाश का भूषण (अलंकरण, सजावट, आभूषण) सूर्य है, कमलवन का भूषण भ्रमर है, वाणी का भूषण सत्य है, वैभव का भूषण दान है, मन का भूषण मित्रता है, सज्जन का भूषण उसका सुभाषित वचन हैं, इसी तरह सब गुणों का भूषण विनय है। विद्वता अगर विनम्रता से आबद्ध न हो, तो वह अहंकार पैदा करती है। सरल आत्मा में विशुद्धि होती है और विशुद्ध आत्मा में धर्म ठहरता है। जो विनीत होता है वह प्रियवादी, हितकारी होने के साथ—साथ सबसे मैत्री भाव रखता है और वही शिक्षा का अधिकारी होता है।

मधुर वचन जो भी कहे, करे नम्र व्यवहार।
दुनिया उसकी ही रही, मिले मान का हार।।

प्रतिभाशाली लोग भी विनम्रता और शिष्टाचार की कमी के कारण सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण है। नम्रता से मनुष्य के ऐसे बहुत से काम बन सकते हैं, जो कठोरता से नहीं।

एकता— वनों में भयंकर आँधी—तूफान आने पर वे वृक्ष उखड़ जाते हैं जो एकाकी खड़े होते हैं। इसके विपरीत घने उगे हुए पेड़ एक—दूसरे के साथ सटकर रहने के कारण उस दबाव को सहन कर लेते है। आंधी—तूफान उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाती।

"परस्पर स्नेह की सघनता मनुष्यों को इसी तरह नष्ट होने
से बचाती है और विकास का अवसर प्रदान करती है।'

देश की एकता नागरिकों की एकता पर आधारित है इस बात को हम एक दृष्टांत के माध्यम से समझे— आचार्य विनोबा भावे को एक बार किसी विद्यालय में व्याख्यान के लिए बुलाया गया। विनोबा जी का मानना था कि छात्रों को सही दिशा दी जाए तो देश का विकास भी उचित दिशा में होता है। वे सहर्ष उस विद्यालय में

गए और छात्रों को अत्यंत प्रेरक उद्बोधन दिया। छात्र विनोबा जी को सुनकर काफी प्रभावित हुए। जब उनका व्याख्यान समाप्त हुआ तो कुछ छात्रों को कागज के टुकड़े देकर कहा– इन टुकड़ों से आप लोग भारत का नक्शा बनाइए। एक युवक वहीं बैठा यह सब देख रहा था। वह उठकर विनोबा जी के पास आया और बोला यदि आपकी अनुमति हो तो मैं भारत का नक्शा बना सकता हूँ। विनोबा जी की अनुमति मिलने पर युवक ने उन टुकड़ों को जोड़कर भारत का नक्शा बना दिया। विनोबा जी ने पूछा–तुमने इतनी जल्दी इन टुकड़ों को जोड़कर भारत के नक्शे को कैसे जोड़ा? युवक ने कहा–कागज के इन टुकड़ों में एक ओर भारत का नक्शा बना हुआ है, जबकि दूसरी ओर आदमी का चित्र है। जब मैंने आदमी की तरफ वाले कागज के टुकड़ों को जोड़ा तो भारत का नक्शा स्वतः बन गया। तब विनोबा जी ने कहा– यदि हमें देश में एकता लानी है तो पहले देशवासियों को एक करना होगा। जब देशवासी एक हो जाएंगे तो देश स्वतः एक हो जाएगा। सच ही है कि एकता में बड़ा बल है। यदि हम विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय या वर्ग में विभक्त न हों और एक दूसरे को देशबंधु के रूप में देखें तो हमारा राष्ट्र उन्नति के शीर्ष सोपान पर खड़ा होगा और एक महाशक्ति के रूप में स्थापित होगा। यह प्रसंग हमें टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने का तरीका बताता है। जीवन में टूटे हुए इंसानों और टूटे हुए दिलों को जोड़ने की कला का नाम ही धर्म है सच्चे इंसान का कार्य तो सुई धागे जैसा होता है कैंची जैसा नहीं। मेरी दृष्टि में जो समाज को जोड़ता है वहीं सच्चा इंसान है जो समाज को तोड़ता है वह सच्चा इंसान कैसे हो सकता है? एकता से हमारा अस्तित्व कायम रहता है, विभाजन से हमारा पतन होता है। जब तक जीव मात्र के साथ एकता महसूस न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप–तप सब ढोंगी बातें है। आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज ने मूकमाटी महाकाव्य में लिखा है कि–

एकता जगी, एक ताजगी

अर्थात् जब समाज में एकता आ जाती है तो एक ताजगी महसूस होने लगती है। समाज में एक ताजगी आ जाती है।

भारत है गुरु पूर्ण विश्व का, मानवता का पाठ पढ़ाता है।
मानवता का दीप जलाकर, नफरत दूर भगाता है।

एक छोटा सा चिन्तन आपके सामने रख रखा हूँ इससे हम देखेगे कि पशुओं में भी एकता के गुण पाये जाते हैं– एक दिन मैंने बंदरों का झुण्ड देखा वे आपस में लड़ रहे थे। यह देखकर मुझसे रहा नहीं गया तो मैंने उनसे पूछ ही लिया कि भाई ये तो बताओ आप लोग आपस में इतना क्यों लड़ते हो? एक बंदर ने उत्तर दिया– सुनो भले मानव हम बंदर आपस में तो लड़ते–झगड़ते हैं लेकिन कोई अन्य जाति का जानवर, पशु–पक्षी या आप जैसा मानव हमारे किसी बंदर को मारने, परेशान करने आ जावे तो हम सभी एक होकर उसका मुकाबला करते हैं। लेकिन आप लोगों में से किसी पर कभी आपत्ति आ जाती है तो दूर भाग जाते हो, आप लोगों की प्रीति दिखावटी है, लेकिन हमारा प्रेम दिखावटी नहीं हो सकता। आज भी हम एक हैं, एक थे और एक रहेगे और आपस में हमेशा लड़ते झगड़ते रहेगे। क्यों साथियों–हाँ, हाँ, हाँ यह सब कुछ बंदरों की बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर मानव की मानवता पर खेद भी हुआ।

हे बुद्धिमान मानव तेरी दशा देखकर रोना आता है,
लेकिन क्या करूँ उसमें मेरा भी नाम आता है।

समाज पैसे की ताकत से नहीं, बल्कि संगठन की शक्ति से उन्नति करती है। कहते हैं–

पानी वहीं टिकेगा जहाँ ढलान नहीं है, सुख वहीं रहेगा जहाँ तनाव नहीं है।
मंदिर–मस्जिद में जाकर भक्त बनने वालो, धर्म वहीं फलेगा जहाँ आपसी दुराव नहीं है।

एक गगन में अनेक तारे एक साथ रहते हैं, एक वृक्ष पर अनेक पक्षी एक साथ रहते हैं इन सब से शिक्षा लेकर हमें भी आपस में एकता के साथ रहना चाहिए।

अपना मित्र सच्चा साहित्य– गांधी जी कहा करते थे कि जो व्यक्ति किताबों को अपना साथी बना लेता है, वह कभी अकेला नहीं रहता लेकिन ध्यान रहे, पतन का मार्ग दिखाने वाले साहित्य का अध्ययन कर, मूल्यवान

समय नष्ट करने के बजाय व्यक्तित्व में निखार आ सके, विषम परिस्थितियों से लड़ने एवं जीवन को उपयोगी बनाने की शक्ति प्राप्त हो सके। जिस प्रकार दीपक की एक छोटी सी लौं गहन अंधकार को दूर भगाने की क्षमता रखती है, उसी तरह कुछ महान् व्यक्ति अपनी श्रेष्ठ लेखनी के द्वारा समाज की बुराईयों को दूर भगाने और सकारात्मक विचारों रूपी उजाला समाज में फैलाने के लिए गुप्त रूप से कार्य कर रहे हैं। अच्छा साहित्य पढ़ने से जो ज्ञान प्राप्त होता है, उससे महान् विचारों की उत्पत्ति होती है। श्रेष्ठ विचारों से महान् कार्यों की उत्पत्ति होती है। जिनके माध्यम से एक महान् व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

महापुरुषों के जीवन चरित्र हमें नसीहत करते हैं।
हम अपना जीवन भी साफ–सुथरा कर सकते हैं।।

अंतर्जगत् में ज्ञान के अभाव में वैसा ही अंधेरा होता है, जैसे आँखों के अभाव में यह संसार। जिस प्रकार आलस्य वश दीपक न जलाकर अंधकार में पड़े रहने वाले व्यक्ति को मूर्ख कहा जाएगा। उसी प्रकार प्रमाद वश अज्ञान दूर कर ज्ञान पाने के लिए प्रयत्न न करने वाले को भी मूर्ख ही कहा जाएगा। विचार एवं संस्कार को परिष्कृत करने का उपाय सच्चा साहित्य है। जिस प्रकार के विचार की पुस्तक पढ़ी जाएगी पाठक के विचार उसी प्रकार ढलने लगते हैं, इसलिए अच्छे विचारों के लिए अच्छा साहित्य पढ़ें। गंदे साहित्य को पढ़ने से मन के पवित्र विचार समाप्त हो जाते हैं। अच्छे साहित्य से हम जीवन जीने की कला सीखते हैं और जिससे हम यह कला सीखते वह साहित्य ही जीवन में अनमोल सम्पदा होती है। एक बार सिकंदर के पास एक सैनिक अधिकारी आया और उसने एक सुन्दर स्वर्ण जड़ित पेटी पेश की। पूछने पर उसने यह बताया कि उसे वह पेटी ईरान में लूट में मिली थी। बादशाह उस पेटी की नक्काशी देख बेहद प्रभावित हुआ और उसने अपने दरबारियों से पूछा कि पेटी में कौन–सी कीमती और खूबसूरत चीज रखी जाए। एक दरबारी ने कीमती हीरे और जवाहरात रखने का सुझाव दिया तो दूसरे ने कीमती वस्त्र रखने को कहा। किसी ने खजाने की चाबियों का गुच्छा रखने को कहा तो किसी ने गोपनीय पत्रों को रखने की सलाह दी, किन्तु बादशाह को एक भी सुझाव सही नहीं लगा। तब वह स्वयं मन ही मन सोचने लगा कि ऐसी कौन–सी वस्तु है। जिसने उसके जीवन को प्रेरणा दी है। उसका अंतरमन बोला, सिकन्दर! तुझे तो गौरव और ख्याति मिली है, वह न तो रूपयों–पैसों से मिली है और न सारे मुल्क को जीतने के कारण बल्कि तूने तो हजारों–लाखों लोगों को बिना कारण मौत के घाट उतारा है। युद्ध और रक्तपात से कोई गौरव नहीं मिला। उसकी अंतरात्मा आगे सोचने लगी कि फिर ऐसी कौन–सी वस्तु है जिसने उसके जीवन को नई दिशा दी है? अकस्मात् उसे ख्याल आया कि पौरूष, पराक्रम और साहस का मार्ग उसे एक ग्रंथ से मिला था। सारे दरबारी, बड़ी उत्कंठा से सिकंदर के चेहरे पर उठते भावों को देख रहे थे। उन्हें जिज्ञासा हो रही थी कि आखिर सम्राट पेटी में किस वस्तु को रखना पसंद करते हैं। अकस्मात् सिकंदर ने आदेश दिया, इस पेटी में महाकवि होमर लिखित महाकाव्य 'इलियट' रखो। यह मेरे लिए सबसे कीमती और बेहतरीन चीज है। इस पुस्तक ने मेरे जीवन को नया मोड़ दिया था। और इसी के कारण मुझमें शौर्य भाव जाग्रत हुआ था।

उदार चित्त बनें– यह मेरा है, यह दूसरे का ऐसा संकीर्ण हृदय वाले समझते हैं। उदार चित्त वाले तो सारी दुनिया को कुटुंब–सा समझते हैं। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो अपने व्यक्तित्व का विकास न करना चाहता हो लेकिन हृदय को विशाल बनाए बिना कोई भी अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता। कहा गया है कि उदारता वह संजीवनी शक्ति है जिसके बल पर मनुष्य का प्रत्येक प्रयास सफल सिद्ध होता है, ऐसी शक्ति से युक्त व्यक्ति सर्वजयी कहलाता है। उदार हृदय वाला व्यक्ति अपना स्वार्थ छोड़कर ऐसा त्याग करता है जिससे दूसरों का जीवन आशाओं और आनंद से भर जाता है। हमें अपनी प्रसन्नता और सहानुभूति के मामलों में कभी कंजूसी नहीं करना चाहिए। ध्यान रहेकृ

हृदय की विशालता ही उन्नति की नींव है।

बात उन दिनों की है जब चंपारन में महात्मा गांधी के नेतृत्व में किसानों का सत्याग्रह चल रहा था। गांधी जी को उस सत्याग्रह सेना में किसानों के अलावा वे सभी लोग शमिल थे, जो उनके सिद्धांतों से सहमत थे और जिनमें आत्मिक बल अपने चरम पर था। इन्हीं सत्याग्रहियों में कुष्ठ रोग से पीड़ित एक खेतीहर मजदूर भी था। उसके शरीर पर असंख्य घाव थे, जिन पर वह कपड़ा लपेटकर चलता था। इतने कष्ट के बाद भी वह अत्याधिक उत्साह से इस आंदोलन में हिस्सा ले रहा था। एक दिन सायंकाल सत्याग्रही अपनी छावनी की ओर लौट रहे थे किन्तु वह कोढ़ी मजदूर चल नहीं पा रहा था उसके पैरों में बंधे कपड़े कहीं गिर गये थे।

घावों से रक्त बह रहा था। किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं गया। सभी लोग आश्रम में पहुँच गए। बस, वही मजदूर नहीं पहुँचा। जब प्रार्थना कक्ष में आए। उन्होंने प्रार्थना आरंभ करने से पूर्व नजर उठाकर अपने चारों ओर बैठे सत्याग्रहियों को देखा, किन्तु उन्हें वह कुष्ठ रोगी नहीं दिखाई दिया। उन्होंने तुरन्त पूछताछ की, तो पता चला कि लौटते समय वह पीछे रह गया था। यह सुनते ही गांधीजी तत्क्षण उठ खड़े हुए और हाथ में बत्ती लेकर उसकी तलाश में निकल पड़े। चलते–चलते उन्होंने देखा कि रास्ते में एक पेड़ के नीचे एक आदमी बैठा है। दूर से ही गांधीजी को पहचानकर वह चिल्लाया–बापू! उसके पास जाकर गांधीजी ने बड़े दुःख के साथ कहा–अरे भाई, तुमसे चला नहीं जाता था तो मुझसे क्यों नहीं कहा? तभी उनका ध्यान उसके पैरों पर गया। वे खून से सने हुए थे। गांधीजी ने तुरन्त अपनी चादर को फाड़कर उसके पैरों पर कपड़ा लपेट दिया और उसे सहारा देकर धीरे–धीरे आश्रम में ले आए। उसके रक्तरंजित पैरों को अत्यंत स्नेहपूर्वक धोया और फिर अपने पास बैठाकर प्रार्थना की। एक पिता की तरह सभी भारतवासियों के प्रति अपार स्नेह, प्रत्येक व्यक्ति की चिंता ने ही बापू को 'राष्ट्रपिता' की उपाधि का सच्चा हकदार बनाया। जो व्यक्ति दूसरों के जीवन में सहायक होता है, वह जीवन के सर्वोत्तम परिणाम बटोर लेता है। मन की उदारता ही प्रदान करती है जीवन की महानता। मन के दरवाजे पर लिखो– 'अतिथि देवो भव', शुभ–लाभ, घर के दरवाजे पर नहीं। दूसरों को आनंदित करने में जो आंतरिक आनंद मिलता है, वही सबसे बढ़िया और उत्तम है।

निष्कर्ष

जीवन एक कला है– इसे सुन्दर बनाइयें।
जीवन एक वास्तविकता है–इसे पहचानिये।
जीवन एक चमत्कार है– इसकी प्रशंसा कीजिए।
जीवन एक रहस्य है– इसे प्रकट कीजिए।
जीवन एक विज्ञान है– इसे अन्वेषित कीजिए।
जीवन एक अवसर है– इसको निखारिए।
जीवन एक प्रतिभा है– इसका सदुपयोग कीजिए।
जीवन एक खजाना है– इसकी सुरक्षा कीजिए।
जीवन एक प्रसन्नता है– इसे बांटिये।
जीवन एक सीमा है– इसे खोलिए।
जीवन एक प्रेम है– इसका विनिमय कीजिए।
जीवन एक गीत है– इसे गुनगुनाइये।
जीवन एक यात्रा है– इसे रोमांचित बनाइये।
जीवन एक ध्येय है– इसे प्राप्त कीजिए।
जीवन एक चुनौती है– इसे स्वीकारिए।
जीवन एक संशय है– इसे सुगम बनाइये।
जीवन एक संघर्ष है– इसे विजित कीजिए।
जीवन एक लालसा है– इसे नियंत्रित कीजिए।
जीवन एक कर्त्तव्य है– इसे निर्वाहिये।
जीवन एक व्याधि है– इसका उपचार कीजिए।
जीवन एक दुःख है– इसे वश में कीजिए।
जीवन एक पाठ है– इससे कुछ सीखिए।
जीवन एक घृणा है– इसे दूर कीजिए।
जीवन एक कठिनाई है– इसे कम कीजिए।
जीवन एक दुःखान्तिका है– उपेक्षा कीजिए।
जीवन एक शाप है– इसे हटाइये।
जीवन एक वरदान है– इसे धारण कीजिए।
जीवन एक उपहार है– इसका आनंद लीजिए।

तनाव, चिंता और परिस्थितियों के दबाने के लिए सहज मुस्कान के लिए जरूरी है कि व्यक्ति अपने अतीत के कड़वे अनुभव को भूल जावे। प्रतिकूल बातों को मन से निकाल देने की आदत डालो, जो मिला है, उसी में संतुष्ट रहने की आदत डालें। क्षणभर की सहज मुस्कान लंबे समय से पल रहे दुःखों को मिटा देगी।

2. सुनो ज्यादा, बोलो कम– मधुरभाषी के लिए कोई शत्रु नहीं होता है। बहु सुनवो कम बोलवो, यों है चतुर विवेक। तब ही विधि से रच्यो, दोय कान जीभ एक।

3. गुप्त बातों को पचाना सीखें– गर पर लिया हो किसी का राज तो छुपा कर रखना। दिल मिले न मिले पर हाथ मिलाकर रखना।

4. क्रोध को शांत रखिए– क्रोध से हम भीतर से टूटते जाते हैं और निराशा हमारा पीछा करती जाती है। जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है वह संयम को अपनाएं एवं क्रोध का त्याग करे।

5. सहयोग की भावना जगाइए– सेवा और सहयोग आत्मसंतुष्टि का प्रबलतम् माध्यम है। तुम्हारा आंतरिक प्रेम सेवा और सहयोग से ही प्रकट होता है। शेखसादी में लिखा है कि अगर आदमी में परोपकार की वृत्ति नहीं है तो इसमें और दीवार पर खीचें चित्र में कोई फर्क नहीं है। मनुष्य ठीक उसी परिभाषा में महान् बनता है जिस परिभाषा में वह मानव मात्र के लिए सहयोग करता है।

सेवा और सहयोग एक ऐसा गुण है, जो तुम्हें पवित्रता प्रदान करता है। इससे उत्साह पैदा होता है, अशांत स्वभाव का स्वतः नाश होता है। समय की सार्थकता सिद्ध होती है। तुम्हारे हाथ और हृदय पवित्र बनें रहेगे। स्वार्थ एवं ईर्ष्या का नाश होगा।

एक गांव में हजार आदमी एकत्रित हैं किन्तु वे परस्पर सहयोग के धागे में बंधे हुए नहीं हैं तो वे हजार व्यक्ति हैं, एक समाज नहीं है। समाज का आधार एक–क्षेत्रीयता नहीं एक–सूत्रता है।

हमेशा याद रखने वाली बातें–
इतने नरम मत बनो कि– लोग तुम्हें खा जाए।
इतने गरम मत बनो कि– कोई तुम्हें छू न सकें।
इतने सरल मत बनो कि– कोई तुम्हें मूर्ख बना दे।
इतने अभिमानी मत बनो कि– कोई तुमसे बोलना पसंद न करे।
इतने सस्ते भी मत बनो कि– लोग नचाते रहे।
इतने सहज मत बनो कि– लोग तुम्हें माने ही नहीं।
इतने गंभीर मत बनो कि– लोग ऊब जाए।
इतने जटिल मत बनो कि– लोग मिल न सकें।
विष से अधिक जहरीला है– अपमान होना।
जिंदगी में पैसे से अधिक मूल्यवान है– इज्जत।
स्वावलंबन से अधिक जरूरत होती है– पुरुषार्थ की।
सत्कार से भी अधिक मीठी होती है– बोली।
कोयले से अधिक काला होता है– कपूत।
चुम्बक से अधिक शक्ति है– मोह में।
प्रगति से अधिक, परिश्रम से भी अधिक जरूरी है– नम्रता।
मानवता और सज्जनता से अधिक मूल्य है– करूणा का।

याद रखें–
पैसे से क्या मिल सकता है क्या नहीं?
पैसे से इंसान मिल सकता है– इंसानियत नहीं।
पैसे से लड़का मिल सकता है– पुत्र नहीं।
पैसे से शिक्षक मिल सकता है– विद्या नहीं।
पैसे से पुस्तक मिल सकती है– बुद्धि नहीं।
पैसे से नौकर मिल सकता है– सेवक नहीं।
पैसे से दर्पण मिल सकता है– आंख नहीं।
पैसे से सुख मिल सकता है– शांति नहीं।
पैसे से सम्मान मिल सकता है– ज्ञान नहीं।

पैसे से औषधि मिल सकती है– आयु नहीं।
पैसे से मूर्तियां मिल सकती है– भगवान नहीं।
पैसे से ज्ञानी मिल सकता है– मित्र नहीं।
पैसे से भोजन मिल सकता है– भूख नहीं।
पैसे से पावडर मिल सकता है– सुन्दरता नहीं।
पैसे से चित्र मिल सकता है– चारित्र नहीं।
पैसे से शान–शौकत मिल सकती है– इज्जत नहीं।
पैसे से मृत्यु मिल सकती है– जिंदगी नहीं।
पैसे से कलम मिल सकती है– विचार नहीं।
पैसे से बिस्तर मिल सकता है– नींद नहीं।
पैसे से दवा मिल सकती है– स्वास्थ्य नहीं।
पैसे से सुख–साधन मिल सकता है– सुख–शांति नहीं।

किससे क्या मिलता है, क्या बढ़ता है?
मीठे वचन से– मित्रता
उदारता से– विश्वास
न्याय से– राज्य
शुद्धाहार से– सद्भावना
सेवा से– सम्मान
विनय से– गुण
श्रृंगार से– अनुराग
क्षमा से– तप
क्रोध से– अपराध
मेहनत से– सफलता
दान से– यश
अभ्यास से– विद्या
लोभ से– मोह
उद्यम से– लक्ष्मी

किसकी आँखों में क्या होता है?
माँ की आँखों में– ममता होती है।
बहन की आँखों में– स्नेह होता है।
गुरु की आँखों में–ज्ञान होता है।
विद्यार्थी की आँखों में– जिज्ञासा होती है।
गरीब की आँखों में– आशा होती है।
दुश्मन की आँखों में– बदला होता है।
ईश्वर की आँखों में– दया होती है।
पिता की आँखों में– कर्त्तव्य होता है।
भाई की आँखों में– प्यार होता है।
सज्जन की आँखों में– नम्रता होती है।
अमीर की आँखों में– अहं होता है।
मित्र की आँखों में– सहयोग होता है।
वैज्ञानिक की आँखों में– खोज होती है।
तपस्वी की आँखों में– वैराग्य होता है।

आज की दुनियां?
एक मुस्कराहट के साथ पड़ोसी को लूटना।
हाथ की शान से लचकाकर खैरात देना ।
चतुराई से, विशेष उद्देश्य से, किसी की भी प्रशंसा करना।

चालाकी से किसी पर दोषारोपण करना ।
एक शब्द में किसी को बर्बाद कर देना।
एक सांस में किसी को जिला देना।
जब दिनभर का काम खत्म हो जाए तो हाथ धो लेना।
एक निश्चित नियम के अनुसार प्रेम करना।
एक निर्धारित कल्पना से अपनी आत्मा का मनोरंजन करना।
बन–ठन कर देवता की पूजा करना।
बड़ी होशियारी के साथ शैतान से मेल–जोल करना।
आखिर इन सब बातों को इस तरह भूल जाना मानो स्मृति नष्ट हो गई हो।
अन्त में ये चार बातें, जो जीवन के हर मोड़ पर काम आएगी।

दुर्जन से दूर, मूरख से मौन, ज्ञानी से बात, सज्जन के साथ।

संदर्भ सूची

[1]. गीता अध्याय– 8 श्लोक 16
[2]. धवला 6/16–17
[3]. राजवार्तिका 8/14
[4]. आचार्य देवसेन आलाप पद्धति गाता 8 सू 127
[5]. न्यायदीपिका पृ 12 धर्मभूषण यति
[6]. आप्तमीमांसा आचार्य समन्तभद्र श्लोक 11
[7]. श्रीमदभिनवधर्मभूषणयतिविरचिता न्यायदीपिका पृ– 18